>

Title: Need to prevent the establishment of Aligarh Muslim University on holy Shuli Bhanjan hill in Aurangabad district of Maharashtra to maintain law and order in the region.

श्री चंद्रकांत खैरे (औरंगाबाद): महोदय, मैं आपके माध्यम से महाराष्ट्र की हमारी भूमि पर जो संतों की नगरी है, उसके बारे में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। मेरा संसदीय क्षेत्र संभाजीनगर, औरंगाबाद है।

सभापति महोदय : औरंगाबाद में कौन से संत हुए हैं।

श्री चंद्रकांत खैरे : महोदय, बहुत संत हुए हैं। संत ज्ञानेश्वर जी भी हमारे जिले के ही हैं।

सभापति महोदय : संत नामदेव जी कहां के हैं?

श्री चंद्रकांत खैरे : संत नामदेव जी हमारे यहां के नहीं थे, वे महाराष्ट्र के थे। वे पंजाब में भी गये थे। मैं यह कहूंगा कि हमारी जो संतों की भूमि है, वह बहुत बड़ी भूमि है। हमारे यहां बहुत बड़ा दिगंबर जी का स्थान है, वह श्रीभंजन पहाड़ पर है। श्रीभंजन पहाड़ रत्नापुर के इलाके में है, यानी कि मेरे निर्वाचन क्षेत्र में है। वहां एक हजार से भी ज्यादा एकड़ जमीन सरकारी जमीन है, लेकिन वहां उस पहाड़ पर हमारे संत एकनाथ महाराज जी ने 12 साल तपस्या की। उनके गुरू जनार्दन स्वामी जी का भी इससे संबंध था। मैं यह कहूंगा कि यह इतना बड़ा संतों का स्थान होने के बावजूद भी, जब हमारे आदरणीय श्री विलासराव देशमुख जी मुख्यमंत्री थे, उन्होंने हमारे भैय्यू जी महाराज जी को एक हजार एकड़ जमीन संत नगरी बनाने के लिए दी थी। उन्होंने दो बार इसके आदेश दिये, लेकिन इस सरकार ने उसे रद्द कर दिया। वह क्यों रद्द की, क्योंकि वहां 336 एकड़ जमीन उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विद्यापीठ की ब्रांच को देना तय किया है। मैं यह कहूंगा की अलीगढ़ मुस्लिम विद्यापीठ की ब्रांच हमारे यहां संभाजी नगर, औरंगाबाद में लाने की जरूरत क्या है? हमारे यहां डॉ0 बाबा साहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विद्यापीठ होने के बाद बहुत सी फैकल्टीज वहां है। इतनी फैकल्टीज होने के बावजूद वहां इस विद्यापीठ की कोई आवश्यकता नहीं है।

मेरा जिला बहुत सैन्सिटिव है जिस कारण वहाँ कोई वारदात भी हो सकती है। खुल्दाबाद या रत्नापुर के बाद जो शूलीभंजन पहाड़ है, उसके बाजू में घश्मेश्वर का मंदिर है जो 12 ज्योतिर्लिंगों में आता है। वहाँ एलोरा की गुफाएँ हैं, जहाँ पर्यटक आते हैं। यही नहीं, वहाँ भद्रा हनुमान जी का जो मंदिर है, वहाँ करीब दस लाख लोग हनुमान जयन्ती के दिन आते हैं और हर शनिवार को भी कम से कम दो लाख लोग आते हैं। इतना भक्तिभाव होने के बाद और इतने श्रद्धालु आने के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय वहाँ आने से डिसटरबैन्स हो जाएगा, लॉ एंड आर्डर बिगड़ जाएगा। आपको पता है कि वहाँ कई बार सिमी वगैरह का कांड भी हुआ है। वहाँ महिस्माल का एक पहाड़ है। वहाँ गिरजा माता का मंदिर है, तिरुपति बालाजी का भी मंदिर है। यह इतना धार्मिक स्थल होने के बाद वहाँ विद्यापीठ लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करूँगा कि अलीगढ़ मुस्लिम विद्यापीठ की स्थापना हमारे यहाँ न करके आप किसी अन्य स्थान पर करें। उनके अध्यक्ष वगैरह भी वहाँ आए थे, मगर यह स्थान जो चुना गया है, उसका वहाँ कई लोगों ने विरोध किया है, कई संप्रदायों ने वहाँ विरोध किया है, कई लोगों ने वहाँ आंदोलन किया है कि यह ज़मीन संतों की है। भय्यू महाराज जी वहाँ संतनगरी बनाने वाले थे। आदरणीय विलासराव देशमुख साहब को मालूम है। वह संतनगरी बनाना चाहते थे, यानी सब संतों का स्थान, जितने भी संत थे - संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव महाराज और भी जितने संत हैं ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : देशमुख जी अभी भी सक्षम हैं।

श्री चंद्रकांत खैरे : वे सक्षम हैं। सर आप भी उनको निर्देश दीजिए कि अपनी सरकार से कहें।

सभापति महोदय : मैं नहीं कहूँगा, समझदार को इशारा काफी है।

â€¦(व्यवधान)

श्री चंद्रकांत खैरे : महोदय, वहाँ संत नगरी में हिन्दू संत तो होंगे ही, लेकिन जो सूफी संत होंगे, उनका भी स्थान होने वाला था लेकिन उसको कैन्सेल करके अलीगढ़ मुसलिम विद्यापीठ स्थापित करने की कोशिश हो रही है। इसका हम कड़ा विरोध करते हैं। मैंने इस संबंध में सभी को पत्र दिया है। मुख्य मंत्री जी को दो-तीन बार पत्र दिया है, महामहिम गवर्नर साहब को दिया है, कपिल सिब्बल साहब को भी पत्र दिया है, लेकिन कोई जवाब मुझे किसी ने नहीं दिया। अगर उन्होंने वहाँ अलीगढ़ मुस्लिम विद्यापीठ की ब्रांच खोलने की कोशिश की तो हमारा बहुत कड़ा विरोध शिव सेना की तरफ से है, वहाँ की हिन्दू जनता का भी विरोध है, यह मैं आपके माध्यम से सरकार को बताना चाहता हूँ।

सभापति महोदय : खैरे जी, अब आपको निर्देश है कि आप जाएँगे नहीं, अभी बैठेंगे।